भारतीय रेलवे मजदूर संघ

(भा० म० संघ एवं स० क० रा० परिसंघ से संलग्न)

13 वाँ त्रैवार्षिक अधिवेशन

राजर्षि टण्डन मंडपम् प्रयागराज

दिनांक 30 सितम्बर 2001

–: स्वागत भाषण :–

परम श्रद्धेय श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी जी, भा० म० संघ के उपाध्यक्ष आदरणीय श्री अमलदार जी, सरकारी कर्मचारी राष्ट्रीय परिसंघ के महामंत्री श्री गिरीश अवस्थी जी, भा० रे० म० संघ के अध्यक्ष श्री दत्ता रावदेव जी, महामंत्री श्री स्वयंभूवू जी, अन्य मंचस्थ पदाधिकारीगण तथा भारतवर्ष के कोने-कोने से इस समारोह में पधारे रेलकर्मचारी प्रतिनिधि बन्धुओं एवं बहिनों,

प्रयागराज की पावन भूमि, जो पुण्य सलिला भगीरथी, कृष्ण रंग में समाहित यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम–त्रिवेणी के नाम से संसार में प्रसिद्ध है– जहाँ अनादि काल से यज्ञादि सम्मेलन होने की परम्परा रही है और अभी तक उसी कड़ी में प्रतिवर्ष सम्पूर्ण देश-विदेश से लाखों लोग एक माह के लिए बस कर एक विशाल नगर की रचना करते हैं और प्रति बारह वर्षों में पूर्ण कुम्भ के अवसर का दृश्य ऐतिहासिक बनता है, जो आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा महान शिक्षा का केन्द्र रहा है और जिसने स्वाधीन भारत को कई प्रधान मंत्री दिये हैं– ऐसी पवित्र नगरी में मैं आपका स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ ।

ब्रह्मपुराण में कहा गया है, "प्रकृष्टत्वा तौ प्रधान्याराज शब्दवान" अर्थात् अपनी उत्कृष्टता के लिए यह प्रयाग तथा प्रधानता के कारण 'राज' शब्द से युक्त प्रयागराज अनादिकाल से भारतीय जनमानस की आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बिन्दु रहा है। इस संपूर्ण देवस्थान रूपी पौराणिक नगर प्रयाग की महिमा का वर्णन शेषनाग के सहस्त्र मुखों से भी संभव नहीं है। गोस्वामी जी ने मानस में लिखा है–

"को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ ।
कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ।।"

इतना ही नहीं–

यत्रैव त्रिगुणवेणी राजते विश्वतरंगिणी ।
श्री माधवो अक्षय वटस्तस्य को वर्णनेक्षयः ।।

अर्थात् जहाँ विश्व की तारणहार वेणी (त्रिवेणी) है, अपने द्वादश रूपों में श्री माधव स्वयं तथा अक्षयवट है, उस प्रयाग का वर्णन कौन कर सकता है ?

इस पौराणिक नगर के पूर्व में महाराज हषवर्धन की राजधानी प्रतिष्ठानपुरम् (वर्तमान झूँसी) उत्तर में शृंगी ऋषि की तपोभूमि शृंगवेरपुरम् परमतपस्वी एवं महान दार्शनिक महर्षि भारद्वाज का आश्रम, दक्षिण में विंध्यपर्वत की श्रेणियों में विराजमान अष्टभुजा दुर्गा एवं मां विन्ध्यवासिनी तथा पश्चिम में बौद्धधर्म के गौरवशाली अतीत को अपने में समेटे संस्कृत के महान व्याकरण आचार्य

कात्यायन तथा आयुर्वेद के प्रणेता महर्षि चरक की जन्मस्थली तथा महाराज उदयन की राजधानी कौशाम्बी स्थित है। इस प्रकार के विशिष्ट रक्षा कवच से अभिरक्षित प्रयाग की पुण्यभूमि पर मैं आपका, सबका एकबार पुनः स्वागत एवं हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

कोणार्क के सूर्य मंदिर का सूर्यरथ और उसके पहिये भारतीय कला की उत्कृष्टता के ही बोधक नहीं वरन् भारतीय चिन्तन एवं मनीषा की सूक्ष्मता और गहनता के भी प्रतीक हैं। पहिए ने मानव जीवन की भौतिक प्रगति में कितना योगदान दिया है यह सर्वविदित है। रथ के उसी पहिये ने आज रेल के पहियों का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। भारतीय रेल देश का सबसे बड़ा सार्वजनिक उपक्रम है। शरीर रूपी राष्ट्र में रेलें रक्तवाहिनी शिराओं के रूप विभिन्न धर्म, जाति तथा लिंग का भेदभाव किये बिना प्राणवायु का संचार कर रही हैं। इन्हें भारतीय अर्थव्यवस्था की मेरूदंड कहना कतई अतिशयोक्ति न होगा।

आज राष्ट्र के समक्ष अनेकानेक चुनौतियाँ हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में देश संक्रमण काल से गुजर रहा है। विदेशी नीतियों के दबाव के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था लड़खड़ा रही है जिसके फलस्वरूप बेरोजगारों को रोजगार देने के स्थान कर्मचारियों की छंटनी की जा रही है। कल-कारखानों में मानव श्रम का उपयोग नगण्य होता जा रहा है। इन अव्यवहारिक सरकारी नीतियों से भारतीय रेलवे मजदूर संघ का प्रारंभ से ही वैचारिक मतभेद रहा है। भारतीय रेलवे मजदूर संघ सदा ही इस बात का पक्षधर रहा है कि "हर हाथ को काम तथा हर पेट को भोजन मिले" संगठन की स्पष्ट नीति है कि "पसीना सूखने से पहले मजदूर को उसकी उचित मजदूरी मिलनी ही चाहिए।"

भारतीय रेलवे मजदूर संघ का तेरहवां त्रैवार्षिक सम्मेलन अपनी राष्ट्रहित एवं उद्योग हित की भावी योजनाओं के क्रियान्वयन में अपना लक्ष्य प्राप्त करे यही मेरी शुभकामना है, इसके साथ ही मैं अपेक्षा करता हूँ कि इस संगठन से जुड़े इसके सभी अनुसांगिक संगठन तथा प्रकल्प अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा एवं शक्ति से राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वाह करें।

अंत में मैं इस पौराणिक तथा राजनैतिक चेतना के केन्द्र बिन्दु प्रयाग नगर में एकत्रित होने तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अपना समर्पण भरा सहयोग देने के लिए आप सब महानुभावों को पुनः धन्यवाद देता हूँ।

जय भारत!

भरतजी अग्रवाल
स्वागताध्यक्ष